ResearchGate

See discussions, stats, and author profiles for this publication at: https://www.researchgate.net/publication/368641710

[illegible], [illegible]

Book · February 2022

CITATIONS
0

READS
28

1 author:

Debaki Sirola
Uttarakhand Open University

23 PUBLICATIONS **0** CITATIONS

SEE PROFILE

All content following this page was uploaded by Debaki Sirola on 19 February 2023.

The user has requested enhancement of the downloaded file.

Education, Literature and Society (Covid-19)

शिक्षा, साहित्य और समाज

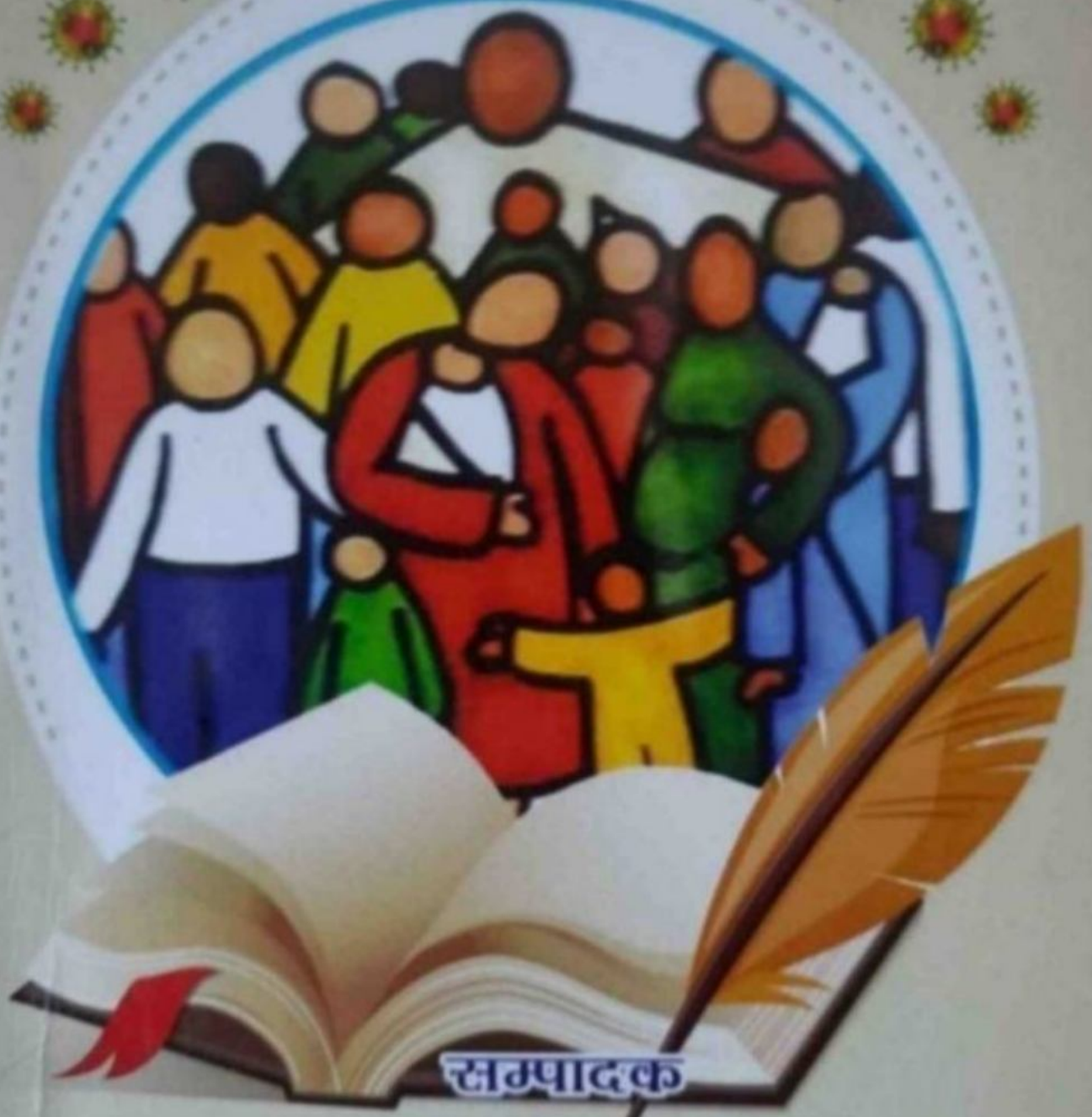

सम्पादक

डॉ. गीता रानी

डॉ. अरुण कुमार चतुर्वेदी

योगेन्द्र सिंह तालियान

अनुक्रमणिका

1.	वैश्विक महामारी कोरोना के सन्दर्भ में शिक्षा, साहित्य और समाज की भूमिका **डॉ0 नवीन शंकर पाण्डेय**	11
2.	कोरोना महामारी और शिक्षा **डॉ0 अरूण कुमार चतुर्वेदी**	15
3.	हिंदी भाषा : वैश्विक परिदृश्य **डॉ. विनोद श्रीराम जाधव**	20
4.	वैश्विक परिवेश में साहित्य की भूमिका **डॉ. वन्दना अग्निहोत्री**	27
5.	समाज पर कोविड–19 का प्रभाव **काशी नाथ चौहान**	33
6.	वर्तमान वैश्विक परिवेश में शिक्षा, साहित्य एवं समाज की भूमिका **डॉ. नागेश्वर यादव**	37
7.	कोविड–19 महामारी में समाज की भूमिका **डॉ0 उमेश चन्द्र पाण्डेय**	44
8.	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में नारी की भूमिका **डॉ0 शिखा रानी**	48
9.	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शैक्षिक चुनौतियाँ एवं समाधान **डॉ. हरिशिव नाथ गुप्ता**	55
10.	उत्तराखण्ड के राजी जनजाति का शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर **डॉ0 देबकी सिरोला**	61
11.	भारतीय संस्कृति और कोरोना संकट : एकांतवास **डॉ गुलाब चंद पटेल**	64
12.	योग एवं मानसिक स्वास्थ्य **डॉ मूर्ति मलिक**	76

10.

उत्तराखण्ड के राजी जनजाति का शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर

डॉ0 देबकी सिरोला

प्रस्तावनाः– आज से 72 वर्ष पूर्व तक राजी आदिम जन–जाति के लोग घने जंगलों के मध्य कन्दराओं व गुफाओं में निवास करते थे। उन दिनों कन्दमूल फल और जंगली जानवरों का शिकार करना इनकी प्रमुख आजीविका थी। कालान्तर में समय बीतने के साथ–साथ वनों का क्षेत्रफल भी घटता गया और इन्हें आजीविका के लिए जंगलों से पर्याप्त सामग्री मिलनी कम हो गयी। इस स्थिति ने उन्हें कुमाउँनी ग्रामीणों के सम्पर्क में आने के लिए बाध्य कर दिया। इस प्रकार इनका सम्बन्ध शेष कुमाउँनी समाज से स्थापित हो गया। प्रथम बार जून 1967 में भारत सरकार द्वारा उत्तराखण्ड की 5 जातीय समूहों को जन–जाति घोषित किया गया। इनमें बुक्शा, थारू, भोटिया, राजी एवं जौनसारी सम्मिलित हैं। इन 5 जनजातियों में राजी जनजाति अन्य जनजातियों से काफी पिछड़ी और निर्धन होने के कारण उसे आदिम समूह में रखा गया है। राजी जनजाति पिथौरागढ़ जनपद के विकासखण्ड धारचूला, कनालीछीना, डीडीहाट एवं जिला चम्पावत के खिरद्वारी गाँव में निवास करती है। यह जनजाति उक्त तीन विकासखण्डों के नौ स्थानों क्रमशः कुलेख भागीचौरा, औलतड़ी, गणगाँव, किमखोला, चिफलतरा, कूटा चौरानी ,मदनपुरी, कन्तोली एवं भक्तिरूवा गाँवों मेनिवास करती हैं। पिथौरागढ़ जिले में निवास करने वाली राजी जनजातियों की कुल जनसंख्या 1122 है। जिनमें पुरूषों की संख्या–620 एवं महिलाओं की संख्या 502 है। इनमें बच्चों की संख्या 487 है। जिनमें बालकों की संख्या 249 और बालिकाओं की संख्या 238 है। इस आदिम जनजाति को वनराजी या बन रावत के नाम से भी जाना जाता है। वर्तमान में इस एकमात्र आदिम जनजाति का अस्तित्व खतरे में है। इनका जन्मदर बेहद कम है। यह जनजाति आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से भी बेहद रूप से पिछड़ी हुई है।

अध्ययन के उद्देश्यः– प्रस्तुत अध्ययन को सम्पन्न करने के लिए निम्नाकिंत उदेश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. राजी जनजाति समुदाय का सामाजिक स्तर ज्ञात करना।
2. राजी जनजाति समुदाय के आर्थिक विकास की स्थिति की जानकारी प्राप्त करना।
3. राजी जनजाति समुदाय में शैक्षिक विकास की स्थिति का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि :– प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। तथा प्रदत्तों के संकलन हेतु निम्न शोध प्रश्न तैयार किये गये हैं–

1. क्या राजी जनजाति के बच्चों में शैक्षिक विकास हो रहा है? उन्हें समान रूप से शिक्षा मिल पा रही है?
2. राजी जनजाति में पूर्व की तुलना में आर्थिक विकास किस गति से हो रहा है?
3. क्या राजी जनजाति को सरकारी योजनाओं और अनुदानों का लाभ मिल पा रहा है?
4. क्या सरकार द्वारा प्रदत सेवाओं से राजी जनजाति का सामाजिक स्तर उन्नत हुआ है?

प्रस्तुत शोध पिथौरागढ़ जनपद के राजी जनजाति समुदाय का ही अध्ययन किया गया है।

राजी जनजाति का सामाजिक एवं आर्थिक स्तरः– आजादी के 72 साल बाद भी बनराजी जनजाति के आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में कोई सुधार नहीं आया है। आज भी उनकी आर्थिक स्थिति बेहद खराब है। स्थानीय हस्त शिल्प कला का उन्हें कोई ज्ञान नहीं हैं और न सरकार द्वारा उन्हें स्थानीय प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी है। कुपोषण, अशिक्षा, और रोजगार इस जनजाति के सामने सबसे बड़ा सवाल है। जिस स्थान पर राजी जनजाति बसी हुई है वह सभी गाँव जंगलों के मध्य पथरीली और उबड़–खाबड़ भूमि में स्थित हैं। भूमि की सिचाई का इन गाँवों में कोई प्रबन्ध नहीं है।

इनकी भूमि कृषी उत्पादन के अनुकूल नहीं हैं। प्रत्येक परिवार के पास एक एकड़ भूमि से भी कम है। पशुपालन, मुर्गी पालन आदि किसी भी व्यवसाय को राजी जनजाति के परिवार नहीं अपना पाये हैं।

इसका कारण यह है कि वह अपनी घुमन्तु जीवन की परम्परा का अभी तक पूर्णतः परित्याग नहीं कर पाये हैं। इस स्थिति में मेहनत मजदूरी करना ही आजीविका का एक मात्र विकल्प रह जाता है, लेकिन मजदूरी भी निरन्तर 12 महीने नहीं मिल पाती है। यही कारण है कि प्रत्येक राजी परिवार बहुत गरीबी और अभाव में जीवन व्यतीत कर रहा है।

राजी जनजाति का शैक्षिक स्तरः– सरकार की नीति सभी क्षेत्रों, राज्यों एवं वर्गों के लिए समान शिक्षा की व्यवस्था करना है इसके बावजूद शिक्षा के क्षेत्र में समान वितरण नहीं हो पाया है। शिक्षा की समान व्यवस्था न हो पाने के कारण पिछड़े वर्ग के राजी जनजाति के शैक्षिक विकास की प्रगति शून्य है। मात्र 4 बालिकाएँ हाईस्कूल स्तर तक की शिक्षा प्राप्त हैं बाकी कोई व्यक्ति आगे की शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाया है। इसका कारण राजी जनजाजि में शिक्षा के प्रति जागरूकता और अभिरूचि का अभाव एवं सुविधाओं का अभाव है। सरकार द्वारा राजी क्षेत्रों में प्राथमिक विद्यालय तो खेले गये हैं जो राजी गाँवों से दूर जागरूक समुदायों के बीच बने हैं जिसका लाभ राजी जनजाति के बच्चों को नहीं मिल पा रहा है। जंगली जानवरों का भय, शिक्षकों का क्रुरूरतापूर्ण व्यवहार, गाँव से विद्यालय की अधिक दूरी भी प्राथमिक शिक्षा के बाद स्कूल छोड़ देने का कारण बना है।

निष्कर्ष– निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राजी जनजाति उत्तराखण्ड की एकमात्र आदम जनजाति है जिनकी आर्थिक स्थिति आज के साधन सम्पन्न वैज्ञानिक युग में भी बेहद खराब है।

1–यह जनजाति लकड़ी के कटान, चिरान और ढुलान के कार्य में बहुत दक्ष हैं। इनकी प्रतिभा का उपयोग व्यवस्थित रूप में नहीं किया गया है अगर सरकार द्वारा इनके कौशल को ध्यान में रखते हुए रोजगार दिया जाय तो इनकी आर्थिक स्थिति में स्वयं सुधार हो जायेगा।

गेस्ट फैकल्टी
शिक्षा संकाय, कु0वि0वि0, एस0एस0जे0 परिसर,
अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)
8755058688

View publication stats